सत्यमेव जयते

सविता

हिंदी गृह पत्रिका

अक्टूबर 2020 - मार्च 2021

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा

Dedicated to Truth In Public Interest

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) एवं

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) के कार्यालय,

केरल, तिरुवनंतपुरम

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी गृह पत्रिका

अक्टूबर 2020 - मार्च 2021

मुख्य संरक्षक

सुश्री अनिम चेरियान

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री को.प. आनंद

प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशा.)

परामर्शदाता

श्रीमती शेरिन एम एस

वरिष्ठ उप महालेखाकार

(प्रशासन एवं लेप.प्र.स.I)

श्रीमती एस. लक्ष्मी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

सदस्य

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका

हिंदी अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा

हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री संदीप कुशवाह

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

आवरण पृष्ठ चित्र – श्री साई कुमार जे.ए. वरिष्ठ लेखापरीक्षक

पत्रिका में प्रस्तुत विचार रचनाकारों के व्यक्तिगत विचार हैं, संपादक मंडल की सहमति आवश्यक नहीं है

संदेश

सरकारी कामकाज में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने की दिशा में कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी की पत्रिका "सविता" के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर अत्यंत हर्ष हो रहा है । यह नितांत सत्य है कि विकट परिस्थितियों में चुनौतियों को स्वीकार करने पर ही सफलता मिलती है, कोरोना-काल में उत्पन्न परिस्थितियों एवं चुनौतियों से उभर कर जिस प्रकार हमारा देश व विश्व आगे चल रहा है, वह अत्यंत ही सराहनीय है।

हिन्दीतर भाषा-भाषी क्षेत्रों में राजभाषा के क्षेत्र में भी हमेशा ही चुनौतियां रही हैं। कोरोना-काल में इन चुनौतियों का सामना जिस प्रकार कार्यालय के राजभाषा प्रेमी कर्मियों ने किया है, उसी की परिणिति है यह अंक।

यह अंक राजभाषा के प्रगामी प्रयोग की दिशा में एक सार्थक कदम सिद्ध हो, यही मेरी कामना है। सविता पत्रिका परिवार से जुड़े सभी सदस्यों को पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संदेश

हिंदी गृह पत्रिका 'सविता' के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर आप सब को हार्दिक अभिनंदन।

पिछला एक साल, संघर्षों का रहा ..... बदलावों का रहा ... अब भी हालातें पूरी तरह बदली तो नहीं है ..... लेकिन हमारे जीवन एक हद तक सामान्य हो गए हैं। गुजरे हुए कल के प्रति संवेदनापूर्ण और आनेवाले कल को लेकर नयी अभिलाषाओं से भरे मुकाम पर हम खडे हैं। बीते वर्ष से जो सीख हमें मिली है उसे सकारात्मकता से अपनाए और अपने कर्मपथ पर अग्रसर हो जाए। राजभाषा हिंदी के प्रयोग को अपनी आदतों में शामिल करें, साथ में अपनी भावात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम के रूप में भी हिंदी भाषा को चुने ताकि कार्यालयीन भाषा की दीवार को पार कर वह अधिक बुलंद हो जाए।

मैं, सविता में योगदान के लिए कार्यालय के कर्मचारियों की सराहना करता हूं, विशेषत: जब पूरी दुनिया कोविड-19 की चपेट में है। हमारे कई रिश्तेदारों/ सहकर्मियों को कोविड के कारण व्यक्तिगत अनुभव हुए होंगे, मैं चाहता हूँ कि भविष्य के प्रकाशनों में भी वे अपना अनुभव लिखें, ताकि वे अपनी भावनाओं को प्रकट कर सके और खुद को मानसिक तनाव से मुक्त कर सके। आइए हम अनिश्चितता की इस स्थिति से अपने देश और दुनिया को आशाजनक भविष्य की स्थिति में ले जाएं।

पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं पत्रिका परिवार को बधाई देता हूँ। इस पत्रिका के प्रकाशन में कार्यालय कर्मियों द्वारा दिया गया योगदान अत्यंत सराहनीय है। पत्रिका के उत्तरोत्तर एवं गुणात्मक विकास हेतु मेरी शुभकामनाएं।

को.प.आनंद

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)

संदेश

हमारी हिंदी गृह पत्रिका सविता के नवीनतम अंक के साथ हम एक बार फिर हाजिर है, उम्मीद है कि आप लोगों को यह अंक भी उतना ही पसंद आएगा जितना हमेशा करते आए हैं। पत्रिका के प्रकाशन से जूडे सभी पदाधिकारियों को बधाईयां।

महामारी के संकट से हमारी लडाई अब भी जारी है। दुनिया, उसके संघातों से अभी तक पूरी तरह उभरी नहीं है। लेकिन कहा जाता है न कि जिन्दगी आगे बढने का नाम है। इसी क्रम में हम भी संघ के प्रति हमारे नैतिक कर्तव्यों को निभाते हुए आगे बढे और अपने काम-काज में जहां तक हो सके हिंदी भाषा को भी अपनाए । हिंदी का स्वरूप कठिन व जटिल तब हो जाता है जब मूल कार्य हिंदी में न करके अनुवाद का प्रयोग किया जाता है। अत: मूल कार्य हिंदी में करने का प्रयास भी जारी रखें।

हार्दिक मंगल कामनाएं।

शेरिन एम एस

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं लेप.प्र.स. I)

मुख्य संपादक की कलम से...

कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका 'सविता' का वर्ष 2020-21 का द्वितीय अंक आप सभी सुधी पाठकों के समक्ष सादर प्रस्तुत है। जहाँ तक हिन्दी की बात है, यह भारत के जनमानस में रची बसी भाषा है। आज के परिदृश्य में देखें तो हम देख सकते हैं कि हिन्दी केवल राजभाषा तक ही सीमित नहीं है अपितु एक वैश्विक भाषा के रूप में उभर गई है।

कोरोना–काल के उत्तरार्ध में अब दुनिया पुन: अपनी गति पर चलने को अग्रसर है, राजभाषा हिंदी भी नई चुनौतियों के लिए सक्षम है। राजभाषा हिंदी को इसके लक्ष्य तक पहुंचाने के लिए यूं तो किसी सहारे की आवश्यकता नहीं है, यदि हम अपने मनोयोग में ठान लें तो भी इसके लक्ष्य प्राप्त किए जा सकते हैं।

हिन्दी ई-पत्रिका 'सविता' के इस अंक में कार्यालय के कर्मचारियों के अनुभव, लेख, कविताएं, कार्यालयीन रिपोर्ट, सामाजिक विषय, चित्रकारिता आदि शामिल किए गए हैं। उम्मीद है कि पत्रिका का यह वर्तमान अंक आप सभी को रुचिकर लगेगा। किसी भी पत्रिका की सफलता उसके पाठकों की सराहना/आलो hindicell.ker1.au@cag.gov.in पर व्यक्त करें। आपके विचार/ प्रतिक्रिया का सादर स्वागत रहेगा।

जय हिन्द, जय हिन्दी।।

डॉ अनीष डी

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

अनुक्रमणिका

1	इंद्रधनुष	श्रीमती उषा बर्टी, व.ले.प.अ.
2	दर्पणों का चक्रव्यूह	श्रीमती सुभद्रा देवी जी, व.ले.प.अ.
3	कुछ पुरानी यादें	श्री शाहनवाज नजीर मोहम्मद, पर्यवेक्षक
4	प्रसन्नता की कुंजी	सुश्री प्रियंका चौरसिया, डी.ई.ओ
5	तो, अब हम पीछे मुड़े	श्री साई कुमार जे. ए., वरिष्ठ लेखापरीक्षक
6	लॉकडाउन	श्रीमती सुशीला पी.वी., व.ले.प.अ.
7	अकेलापन	सुश्री देविका ए.एन.पुत्री श्री जीसी नारायणन पोट्टी
8	मैं हार हूं	सुश्री ज्योति, लेखापरीक्षक
9	हिंदी कहानी कल और आज	श्री षाजी वी. एस. वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10	फिर से...	श्रीमती राधिका टी.वी., व. हिंदी अनुवादक
11	डायबिटीज़: एक गंभीर समस्या	श्रीमती अंजुम ज़ेहरा पत्नी श्री सआदत हुसैन
12	31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा रिपोर्ट	
13	राजभाषा हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम	
14	मेरा कसूर बता दो	श्री सजीन्द्र कुमार, सहायक पर्यवेक्षक
15	मां	सुश्री मालविका जे. आर. पुत्री श्रीमती राखी पीओ
16	हार-जीत	श्री पारितोष चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
17	भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग का मिशन, दृष्टि और नैतिक मूल्य	

उषा बर्टी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इंद्रधनुष

घनघोर वर्षा के बाद निकला
रंगीला एक इंद्रधनुष प्यारा सा
आसमान की माँग में डालके सिंदूर
आया है इंद्रधनुष सूनेपन को भगाने दूर

लेकर प्रत्याशा का संदेश आया
सब के मन को खूब बहलाया
आओ गाएं हम सब मिलकर
आओ नाचें सब गम भूलकर

चार दिन की है यह जिंदगी
मुश्किलें तो आती जाती रहेगी
मुस्कुरा कर सफर पूरा करना है
रुकावटों के सामने हिम्मत न हारना है

जीवन में जब छा जातें है बादल काले
चारों तरफ जब दिखें न उजाला
इंद्रधनुष का संदेश याद है रखना
नई उमंग से हर संघर्ष का सामना है करना

अपना इंद्रधनुष खुद है बनना
जीवन में सतरंगी शोभा लाना
औरों के जीवन को भी रंगों से भरना
ईश्वर का सदा आभारी रहना ।।

सुभद्रा देवी जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

दर्पणों का चक्रव्यूह

शहर में मेला लगा हुआ था। कई दिनों से इसकी चर्चा सुन रही थी। सप्ताह भर की व्यस्तता के बाद आज जैसे ही अवकाश मिला। मैं मेले में चली गई। बहुत भीड़ थी। चारों ओर विशाल समूह था। सभी खुश व उत्साहित दिख रहे थे। मैं भी जैसे उसी भीड़ का हिस्सा बन गई। सामने विशाल पहिये जैसे झूले, हिंडोला, बच्चों के लिए कई सवारी थीं। खाद्य वस्तुओं, खिलौने, पौधे, मोबाइल, कैमरा, किताबें, कपड़े, जूते आदि बेचने वाले ढेर सारे स्टाल। रोशनी से जगमगाता हुआ पूरा मेला मैदान बहुत ही मनोरम लग रहा था। लोग रंग-बिरंगे कपड़े पहने थे। सभी मेलों की तरह, यह भी परी भूमि की तरह लग रहा था। मैं अकेली आई थी। योजना मित्रों के साथ आने की थी पर मित्र अंतिम समय में नहीं आ सके। मेला दो महीने पहले शुरू हुआ था और कुछ दिनों में बंद हो रहा था। मैं वर्षों से किसी मेले में नहीं गई थी। इस वर्ष मैं खुद को रोक नहीं पाई। मैं अकेली थी लेकिन मैं दृढ़ थी कि यह स्थिति मुझे मेले का आनंद लेने से नहीं रोक सकेगी।

सबसे पहले मैं आइसक्रीम बेचने वाले स्टॉल पर पहुंची, एक आइसक्रीम खरीदी और फिर गुलाबी कैंडी। यह कुछ ही क्षणों में मेरे मुंह में पिघल गई। इसके बाद जूस स्टॉल पर पहुँची एक गिलास ताजा गन्ने का रस पिया। मन जैसे तरो-ताजा हो गया।

जूस स्टॉल के सामने विशाल पहिये जैसे झूले लगे थे। मैं कभी बड़े झूलों पर नहीं बैठी थी। मन में डर भी था और उत्साह भी। मैं सबसे बड़े झूले में बैठ गई। झूले की सवारी शुरू हुई। हर्ष से सभी चिल्लाने लगे, मैं भी चिल्लाई, फिर खुद ही हँसने लगी। झूले की सवारी मजेदार थी। जैसे ही झूले का चक्कर पूरा हुआ, मैं ऊपर पहुँच गई, अब मैं अपने चारों ओर देख सकती थी। यहाँ से रोशनी में नहाया पूरा शहर दूर तक दिखाई दे रहा था। मैदान काफी नीचे था और मैं पूरा मेला-परिसर देख सकती थी। बीच-बीच में चलते पटाखे अचानक रात के आसमान को रोशन कर रहे थे। बहुत सुंदर दृश्य था।

झूले से उतरने के बाद मैं भूत-घर गई। मैं टिकट पाने के लिए पंक्ति में लग गई। अंदर से जोर की चीखें सुनाई दे रही थीं। तभी अचानक दरवाजा खुला और लोग बाहर निकल आए। कुछ लोग डरे हुए थे तो कुछ लोग चिल्ला रहे थे। दूसरे हंस रहे थे। मेरे घर के पास भी एक भूत घर था। जब मैं छोटी बच्ची थी, मैं बाहर खड़ी, चिंता मे इंतज़ार करती कि क्या वे लोग भूत-घर से बाहर आएंगे। वे हमेशा बाहर आते थे, लेकिन मुझे भूत-घर के अंदर जाने में बहुत डर लगता। आज मैंने फैसला किया कि मैं अंदर जाऊंगी। मैंने टिकट लिया और अंदर चली गई। अंदर घना अंधेरा था और एकदम सन्नाटा। टूटी हुई खिड़कियों से बाहर से माध्यिम सी रोशनी आ रही थी। मेरे सामने लोगों का एक समूह था, जो मेरे साथ अंदर आया था। मैं उनके करीब-करीब ही चल रही थी क्योंकि मैं अकेला नहीं रहना चाहती थी। मकड़ियों के जाले छत से लटक रहे थे। कुर्सियों की एक पंक्ति थी। एक लंबी सफ़ेद पोशाक पहने कोई व्यक्ति एक कुर्सी से उठा और मेरी तरफ आया। उसने अचानक मेरे चेहरे को छुआ। मैं डर गई और जोर से चिल्लाई। अचानक मेरे पास का दरवाजा खुला और मैं तेजी से बाहर की ओर भागी। मुझे जैसे कुछ नज़र ही नहीं आ रहा था। मैंने दौड़ते हुए किसी व्यक्ति को नीचे भी गिराया। वह गुस्से से चिल्ला रहा था। भागते समय मैं, न रुकी, न पीछे देखा।

काफी दूर भागने के बाद जब भूत का डर ख़त्म हुआ मैं तब रुकी और सामने दूसरे तम्बू में चली गई। यह डायनासोर पार्क था। बड़े बड़े डायनासोर ने अपना चेहरा घुमाया। उनके बड़े-बड़े खुलते बंद होते मुँह रोमांचित कर रहे थे। रात बढती जा रही थी और अंधेरा गहराता जा रहा था, पर रोशनी में नहाया हुआ मेला रात से जैसे अछूता सा था। सामने दर्पण घर नजर आ रहा था। मैं दर्पण घर की ओर चल पड़ी। मैंने इसे पहले कहीं देखा था फिर भी इसे देखने की मन में उत्सुकता थी। टिकट बेचने के लिए काउंटर पर कोई नहीं था। शायद सब लोग निकल चुके थे क्योंकि देर हो चुकी थी। एक छोटा दरवाजा खुला था और मैं अंदर से आती रोशनी को देख सकती थी। उत्सुकतावश मैं अंदर चली गई। दरवाजा धीरे-धीरे मेरे पीछे बंद हो गया। सामने बहुत लंबा गलियारा था। मैं अंदर ही अंदर चलती रही। बाएं और दाएं रास्ते थे। हर तरफ मुझे अपना प्रतिबिंब नज़र आ रहा था। मैंने चमकीले पीले और नीले रंग की पोशाक पहन रखी थी और मैं अपने आप को बाएँ, दाएँ, सामने और पीछे, अपने चारों और दूर-दूर तक, अपनी पीली और नीली पोशाक में देख सकती थी। मैं वापस चलने लगी लेकिन मेरी सारी छवियां मेरी ही तरफ आ गईं। मुझे नहीं पता था कि बाहर जाने के लिए रास्ता किस तरफ है। मैं अपने बाएं और दाएं रास्ता तलाश रही थी।मुझे लगा मैं अपनी ओर भाग रही थी। मैं घबरा गई और अचानक एक दर्पण से टकरा गई। दर्पण तो टूटा ही मेरा माथा भी कट गया और खून मेरी पोशाक पर बहने लगा। मेरी पीली, नीली पोशाक अब लाल होने लगी। मैं लड़खड़ा कर जमीन पर गिर गई। मैंने ऊपर की ओर देखा। दर्पणों में, मेरे कई खंडित, भयभीत लहूलुहान चेहरे मेरी ओर देख रहे थे।

मैं सन्नाटे में जोर-जोर से चिल्लाने लगी। दर्पणों का चक्रव्यूह जैसे मेरे चारों ओर घूम रहा हो।

शाहनवाज नजीर मोहम्मद
पर्यवेक्षक

कुछ पुरानी यादें

40-50 साल पहले हमारी सड़कों और देश में इतना सारी कार-मोटरसाइकिल वगैरह नहीं थी, मगर साइकिल बहुत चलती थी। लोग आजकल कार/बाइक जैसे इस्तेमाल करते हैं वैसे ही साइकिल इस्तेमाल होती थी। 10-15 किलोमीटर तक तो लोग आराम से साइकिल चलाया करते थे। हर घर में, जैसे आज कार होती है, वैसे ही साइकिल हुआ करती थी।

घर में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति की शान उसकी साइकिल होती थी। यानि साइकिल देखते ही हमको मालूम हो जाता था कि वह किस विभाग या श्रेणी का होगा। जैसे कि रैली नाम की साइकिल उस जमाने में आज की बेंज कार से कम नहीं थी। जिसे एकदम चकाचक रखा जाता था। रोज़ सफाई करके तेल-वेल डालकर एकदम नया जैसा रखा जाता था।

उस साइकिल में एक छोटा सा डायनेमो होता था और आगे की तरफ एक छोटी सा बत्ती (लाइट) होती थी। डायनमो एक लॉक निकालने से पीछे की टायर में लगाया जाता था और उसके ऊपर के हिस्से का एक व्हील घूमना शुरु होता था, जिससे बिजली प्रसारित होती थी, इससे आगे की बत्ती (लाइट) जलती थी और डायनमो से जुड़ी एक छोटी सी लाल बत्ती जलने लगती थी।यानि इससे रात में आगे दिखाई भी देता था और पीछे की लाल बत्ती से जो लोग पीछे से भी आ रहे होते थे, उनको भी मालूम पड़ जाता था कि आगे कोई वाहन है। उस वक्त धनाडय लोग एक लंबा सा छतरी लेकर चलते थे और इसे हमेशा ही साइकिल में एक अनौखे तरीके से लगाया जाता था जिससे वह बिल्कुल फिट रहता था। और जब ये बायसिकल स्टैंड पर चढा कर ताला लगाने के बाद पार्क करके अपनी छतरी व थैला आदि लेकर अपने दफ्तर की ओर चल पडता था।उन दिनों साइकिल देखकर पता चल जाता था कि चलाने वाला कौन है ?

हरक्यूलिस नाम की भी एक साइकिल भी उस समय बहुत प्रचलित थी, जो अपनी मजबूती के लिए जानी जाती थी। मजदूर वर्ग के लोग भारी सामान ले जाने के लिए भी इसका प्रयोग करते थे।

हमारे मामाजी के पास भी एक रैली साइकिल थी, और उसमें भी डायनेमो और आगे-पीछे बत्तियां थीं। साइकिल की सीट पर एक मुलायम सीट कवर था। सीट और हैन्डिल के बीच जो लम्बा सा डंडा था उसमें भी एक कवर होता था। साइकिल के पीछे एक छोटा सा कैरियर लगा होता था, जिसमें सामान/पुस्तक जैसी छोटी-मोटी चीज रख सकते थे। आज-कल कारों में जैसे बेबी सीट होती है, वैसी एक सीट हैन्डिल के पास लगाई जाती थी, जिस पर छोटे बच्चों को बैठाकर घुमाने ले जाया जाता था।

साइकिल जैसे ही घर में पहुंच जाती थी, उसे ताला लगाकर घर के अन्दर सुरक्षित रखा जाता था। अगले दिन जब मामाजी को दफ्तर जाने का समय होता था, तो वे कुछ समय पहले हमें बुलाकर साइकिल की चाबी देते थे, और हम उसका साफ-सफाई करके तेल-सेल डालकर एकदम चकाचक बना देते। इसके बदले में हमें थोड़ी देर के लिए उस अनमोल साइकिल को चलाने का सौभाग्य प्राप्त होता था।आजकल तो बच्चा के पैदा होने से पहले ही उसके लिए साइकिल खरीद दी जाती है, और जैसे जैसे वह बड़ा होता जाता है, उसकी साइकिल भी बदलती जाती है। मगर बडा होने पर तो भाई को सिर्फ कार या बाइक ही इस्तेमाल करनी होती है।

साइकिल तो आजकल जैसे सड़कों पर दिखती ही नहीं, और साइकिल के नाम पर जो चलन में हैं उनमें पुरानी साइकिल जैसा दिखता भी नहीं है, साथ ही लाखों में है उनका दाम।

वाह री मेरी साइकिल!

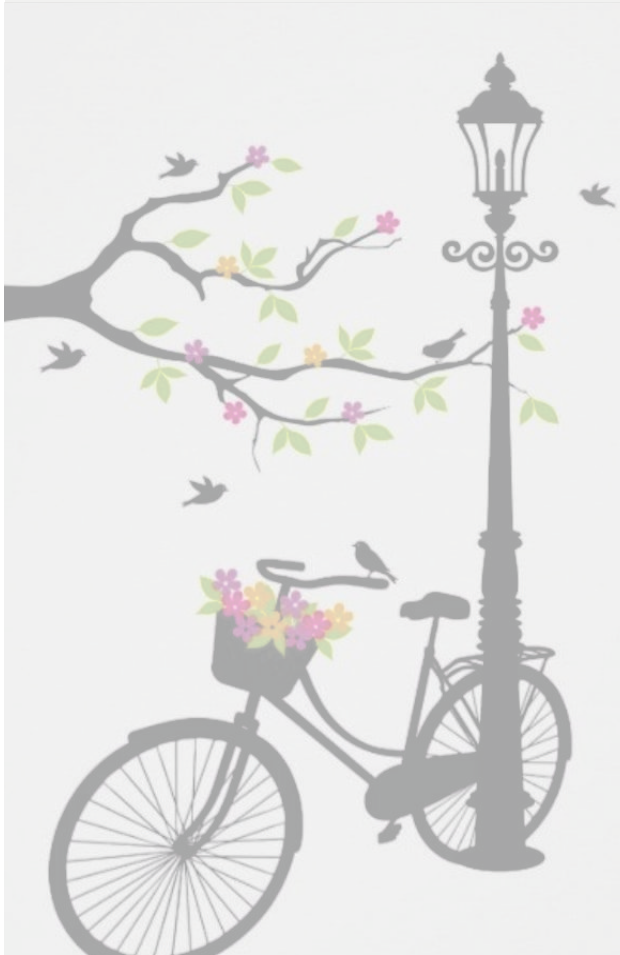

प्रियंका चौरसिया
डी ई ओ

प्रसन्नता की कुंजी

"याद रखिए खुशी इस बात पर निर्भर नहीं करती कि आप कौन हैं आपके पास क्या है यह पूरी तरह इस बात पर निर्भर करती है कि आप क्या सोचते हैं।"

आज की भागदौड़ भरी जिंदगी में खुद को खुश रख पाना भी बहुत मुश्किल है और तनाव और बढ़ती प्रतिस्पर्धा के चलते व्यक्ति तनाव व्यस्त हो रहा है। खुशियां पाना इतना कठिन तो नहीं है हमारे चारों और खुशियां ही खुशियां हैं, जरूरत है तो उसे पहचानने की। एक रिपोर्ट के अनुसार भारत में हर पांचवा व्यक्ति तनाव से ग्रसित है और जब लोग ऐसा तनाव या दबाव सहन नहीं कर पाते तो आत्महत्या जैसा कदम उठा लेते हैं। क्या सच में खुद को खुश रख पाना इतना ज्यादा मुश्किल है?

प्रसन्नता हम पर ही निर्भर करती है। जो चाहा वो मिल जाना सफलता है, जो मिला उसको चाहना प्रसन्नता है।

"लफ्जों के इत्तेफाक में, यूं बदलाव करके देख
तू देख कर न मुस्कुरा, बस मुस्कुरा कर देख"

खुशियों का सबसे बड़ा मंत्र है कि दूसरों से उम्मीद ना रखें। अपनी खुशियों की बागडोर किसी और के हाथ में कभी मत दीजिए। अपनी खुशियों की जिम्मेदारी आप खुद आपकी खुद की है इसलिए अपने आप को खुश रखने के तरीके आपको खुद ढूंढने होंगे, और उसके लिए सबसे पहले लोगों से उम्मीद रखना छोड़ना होगा, जितनी ज्यादा उम्मीद होगी, टूटने पर उतना ही ज्यादा दर्द देगी, इसलिए चाहे वो कोई भी हो आपके माता-पिता, दोस्त, भाई-बहन या आपका जीवन साथी, उम्मीदे मत रखिए।

प्राय: देखा जाता है कि हमें किसी कार्य में सफलता ना मिले तो हम हताश होकर बैठ जाते हैं, हंसना छोड़ देते हैं, कुछ तो जीना भी छोड़ देते हैं। ऐसे में यह समझना जरूरी है कि जिंदगी में आप अकेले नहीं है जिसे कोई असफलता हाथ लगी है, कुछ ने तो इसे अपनी ताकत बनाया है, अपनी गलतियों को सुधारा और ऊंचे मुकाम पर पहुंचे। अब ये आपके हाथ में है कि असफलता को हार मानकर उदासी की वजह बनाते है या उसे अपनी ताकत बनाकर खुशियों का रास्ता ढूंढते हैं।

कई महिलाओं में यह आदत ज्यादा होती है कि वो हमेशा अपने परिवार के लिए ही जीती हैं, खुद के लिए सोचने का समय भी नहीं होता उनके पास। पूरा दिन घर की जिम्मेदारियों में निकालने के बाद भी वो अगले दिन के कार्यों की लिस्ट लेकर सोने चली जाती है, ऐसे में तनाव होना आम है। उन्हें चाहिए कि घर के कामों के साथ-साथ दिन में थोड़ा समय वह खुद के लिए भी निकालें, सजें-सवरें, अपनी रुचियों को समय दें। ये बात पुरुषों पर भी लागू होती है, दफ्तर से छुट्टी ले घूमने जाते दोस्तों के साथ समय बिताएं, परिवार व बच्चों को समय दें। इस तरह खुशियां आप का दामन कभी नहीं छोड़ेंगी।

जब भी कोई मुश्किल आए, कोई घटना आपके सामने घटित हो तो हमेशा उसका समाधान के बारे में सोचें, न कि समस्या के बारे में। कोई भी परेशानी से निकलने का उपाय ढूंढने की जगह अगर आप समस्या को देखकर दुखी होंगे तो ना समाधान निकलेगा नहीं खुश रह पाएंगे। इसलिए जरूरी है कि समाधान के बारे में सोचें ना कि समस्या के बारे में। यह खुशियों का मूल मंत्र है।

खुश रहने के कुछ और निम्न तरीके भी हैं –

1. संगीत सुनें, यह आपके तनाव को कम करता है और मन को खुशी देता है।
2. किसी छोटे बच्चे के साथ खेले, उसकी हंसी आपकी सारी परेशानियां भुला देगी।
3. जो कुछ भी परेशानी है, एक डायरी में लिख लें या किसी अपने के साथ शेयर करें हल्का महसूस होगा।
4. पौधे लगाएं, अच्छा वातावरण कर आपको खुश रखेंगे।
5. कोई पालतू जानवर पालें, उसे घूमाएं/वक्त बिताएं, अच्छा महसूस करेंगे।
6. दोस्तों के साथ घूमने जाएं, शॉपिंग करें, फिल्में देखें, आपको खुशी मिलेगी।

अंत में यही कहना चाहूंगी कि अच्छे जीवन का मंत्र है-

"स्वस्थ रहिए, खुश रहिए, खुश रखिए।"

देविका ए एन
सुपुत्री जी सी नारायणन पोट्टी,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अकेलापन

अजब सी भीड थी जमाने में
लेकिन हर कोई अन्दर से अकेला निकला
खरीददार तो बहुत थे प्यार के
परन्तु दूकानदार ही भिखारी निकला ।

चमक तो बहुत थी इन पैसों में
पर अपनापन खरीदने में नहीं
धूंधला निकला अजब सी
तलब तो हर किसी को थी प्यास बुझाने की ।

अफसोस है खाट का धोबी ही प्यासा निकला
दुनिया को उजाला करने चला था
पर जलते दिए के नीचे ही
अंधेरा निकला अजब सी ।

साई कुमार जे.ए
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तो, अब हम पीछे मुडे

तो, अब हम पीछे मुडे ।

हृदय को बहलाने और उत्तेजित करनेवाले, हद से ज्यादा अपार संकेत पद्धति तरंगों से पलायन कर मुक्ति चाहे तो, अधिक उपयोग के दुष्प्रभाव से जरा शांति और चिकित्सा चाहे तो,

अब हम पीछे मुडे ।

हिरणों, गायों, हाथि या पशु शायद कुछ और जीव हो संकट देनेवाली प्लास्टिक भूत ने समस्त नदी और जल में भर दिया कालुष्य महामारी से बचकर, मां प्रकृति के गोद में लोरी सुनने का अवसर बचाके रखने के लिए

अब हम पीछे मुडे ।

नींद से उठने के तुरंत बाद, बेवजह का व्यस्त उल्झान से हटना चाहे तो, हटकर हाथ-हाथ से मिलानेवली मैत्री में खोकर, यादों को संजोना चाहे तो

अब हम पीछे मुडे ।

हर जगह , न इधर न उधर, हर जगह आहार रूप में मिलनेवाले अनारोग्य से बचकर, सब्जियों में फलों में प्राणान्तक रसायन संजात, इन से बचकर

अब हम पीछे मुडे ।

फूलों व फलों का चंद चुपने के लिए, रात में चंद्रमां से सजी ठंडी रेत के टीलों में बैठने के लिए

अब हमें पीछे मुडना चाहिए ।

इतना भी आगे न चले, उम्र से पहले वृद्ध बने, समय से पहले सौंदर्य खोये,

ऋतु से पहले फल लिए, फिर वापस पीछु न चल पाए

कम से कम अब तो पीछे चले....चलो पीछे लौट चलते हैं ।।

सुशीला पी वी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

लॉकडाउन

भारत प्राचीन काल से ही अनेकता में एकता के लिए विख्यात है। साथ ही साथ भारत में मानव सामाजिक प्राणी के रूप में भी स्थापित किया हुआ था। भारत में सदियों से संयुक्त परिवार की प्रथा चलती आ रही है। मानव धीरे-धीरे अनेकों क्षेत्रों में विकसित होने लगा और विकास में मगन होकर अपने पारिवारिक और प्राकृतिक मूल्य से दूर होने लगे। इसके साथ-साथ वैश्वीकरण का असर भी हो गया तो मानविक विचार भी हाथ से छूटने लगे। इसके परिणामस्वरूप संयुक्त परिवार उजडकर अणु कुटुम्ब बनने लगे। तब तो मां-बाप जीने लगे अपने ही तरीके से और बच्चे अपनी ही दुनिया में खोने लगे। विकास का अहंकार सर पर चढने पर और खुद की लापरवाह करतूतों के कारण दुनिया में जीना ही असहनीय हो गया। इतने में कुदरत ने निर्णय लिया कि परिवर्तन लागू करने का उचित समय आ गया है। ऐसा हुआ प्रवेश एक महाशय का..... एक अणु वायरस (कोविड 19) और चल पडे मौजूदा स्थिति को नियंत्रण में लाने। और आ गया लॉकडाउण का दौर और नतीजा यह हुआ कि एक अणु कुटुम्ब जो काम-काज के लिए दूर बसे हुआ था, संयुक्त परिवार बन गया। साथ में खुशी-खुशी समय बिता रहे थे। इस खुशी के मौके पर विवाह योग्य लडके के लिए रिश्ते देखना शुरु तो किया था लेकिन लडके के सर पर काम का बोझ मंडराने के कारण कुछ दिनों के अंदर ही अपने कार्य स्थल पर वापस जाने के लिए मजबूर हो गए। तब उसके छोटे भाई का मानसिक तनाव शुरु हुआ। इसके लिए जो समाधान प्रस्ताव उसने रखा था कि उसे एक पालतू पिल्ला चाहिए .... इससे शुरु हुआ मां-बाप का तनाव कि उनके छोटे घर में पालतू पिल्ला का देख-भाल कैसे हो सकता है। मगर लडके ने किसी भी कीमत पर हासिल करके पालने का कठोर निर्णय लिया। ऐसे दोहरे मन से लडके के रुचि को स्वीकार किया।

आया घर में एक नन्हा सा मेहमान, कुछ ही दिनों में घर के, पडोसियों के, रिश्तेदारों, मित्रों के आँखों का तारा बन गया। लडका तो घर बैठे काम करता था (यानि कि वर्क फ्रम हॉम) और इस घटना के बाद उसके काम में भी प्रगति होने लगी।

लॉकडाउण के बाद काम पर वापस जाते लडके और उसके माता-पिता के सामने एक दुविधा उभर आयी कि पिल्ला किसके पास रहेगा। शुरु हुई कानूनी लडाई कब्जे के लिए, मुकदमा और दायरा फाईल किए गए। जैसे पोते के लिए करते हो वैसे ही नन्हे से पिल्ले के लिए मुकदमा चलाने के लिए तुले गए थे।

परिवार और न्यायालय में कब्जे की कार्रवाई जोश से चल रहा था, पिल्ला तो चंचल होता जा रहा था और उसके ऊपर चलनेवाले मुकदमा की उसको क्या खबर थी।

इतने में कहानी में ट्विस्ट आया ....स्थिति बदल गयी... लॉकडाउण के बाद तुरंत कार्य स्थल जाना अनिवार्य नहीं था। निर्णय इस वित्त वर्ष के बाद और विस्तृत सर्वेक्षण के बाद ही लिया जाएगा। इस ट्विस्ट से लडके और उसके माता-पिता की आँखें खुल गयी।

पिल्ला तो छह महीने के अंदर ही बडा हो गया था। तब पिल्ले को घर के चार दीवारों के भीतर रखना मुशकिल होने लगा। इतने में तो सब पिल्ले को घर के तीसरे बेटे की तरह मानने लगे थे। बच्चा तो बच्चा है, चाहे इंसान का हो या अन्य जीव जन्तुओं का। खेलना-कूदना उसका अधिकार है और उससे वंचित रखना नाइंसाफी होगी। घर के बुजुर्ग ने उसके लिए एक उपाय बताया ..... पिल्ले को अपने जमीन-जायदाद वाले रिश्तेदार को सौंपा जाए। घर के सब लोग इस फैसले से खुश हो गए।

नए वातावरण में आते ही पिल्ले ने आर-पार देखे बिन, पिंजरे से आजाद पंछी की तरह उछल कूदकर खेलने लगा।

एक महाशय के आगमन और लॉकडाउण ने मानव की आंखें खोल दी और उसको यह सिखलाया कि प्रकृति के खिलाफ कुछ करने का अंजाम अच्छा नहीं होगा और उसके साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलना ही जीने का उत्तम तरीका है।

ज्योति
लेखापरीक्षक

मैं हार हूं

मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।
कि मुड़के देखोगे तू जितनी बार पीछे
मैं उतनी बार हूं
तू मुझे पार कर
कोई द्वार खोले बैठा है सामने
मैं तेरे सपनों का एक छोटा सा आकार हूं
मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।
कि थक कर जब शरीर लगे कराहने
मैं धुन बनकर सवार हूं
तुझे रोज खींच लूंगा पीछे
मैं जीत का ही आसार हूं
मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।
कभी दुख तो, कभी चुनौतियों के लिए जिम्मेदार हूं
पर मुझे गलत ना समझना
मैं जीत की पहली और आखरी तार हूं
मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।
मुझे जीत कर तो देख
जीत का जश्न ही कुछ और होगा
तू छू कर एक बार देख मुझे
मैं सफलता के पीछे छुपा हुआ
तेरा पूरा संसार हूं
मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।
मैं हार हूं.....
मैं बार-बार हूं।।

हिन्दी ई-गृह पत्रिका 'सविता' के पिछले अंक का विमोचन

प्रधान महालेखाकार सुश्री अनिम चेरियान की उपस्थिति में सविता के पिछले अंक का विमोचन करते हुए प्रधान महालेखाकार श्री को प आनन्द

प्रधान महालेखाकारों के साथ वरिष्ठ उप महालेखाकार एवं अधिकारीगण

षाजी वी एस
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हिंदी कहानी कल और आज

कथा साहित्य का आधुनिक रूप और वस्तु विन्यास पश्चिमी साहित्य के भारत में आगमन के बाद दिखाई पड़ता है । निश्चय ही यह पश्चिम के 'फिक्शन' का पर्याय है और सृजनात्मक बोध एवं रचना प्रक्रिया की दृष्टि से भी उसीके समीप है।

आधुनिक हिंदी कहानी का विकास संस्कृत कथा साहित्य परंपरा में न होकर पाश्चात्य साहित्य विशेषतया अंग्रेजी साहित्य के प्रभाव रूप में हुआ । भारत में गद्य का प्रयोग 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में शुरू हुआ जब सत्ताधारियों को व्यापक जन समूह से संपर्क स्थापित करने और उस तक अपनी बातें पहुंचाने की आवश्यकता महसूस हुई । इसी दौर में हम भारतवासियों को पाश्चात्य साहित्य विशेष रूप से उसकी गद्य विधाओं के संपर्क में आने का मौका मिला जो निश्चय ही आधुनिक जीवन और विचारों से संयुक्त थी । कहानियों की रचना का प्रारंभ भारतेंदु युग से हुआ । हिंदी कहानी के संपूर्ण विकास को चार युगों में बांटा जा सकता है:

1. भारतेंदु युग
2. द्विवेदी युग
3. प्रसाद व प्रेमचंद युग
4. वर्तमान युग

कई लोग इंसा अल्लाह खान की 'रानी केतकी की कहानी' (1803 ई.) को हिंदी की पहली कहानी मानते हैं, लेकिन कहानी की वास्तविक विकास यात्रा बीसवीं शताब्दी के साथ हुई । किशोरी लाल गोस्वामी और माधव प्रसाद मिश्रा (1900) से चलकर प्रेमचंद (1915) तक आते-आते कहानी एक वास्तविक साहित्य विधा के रूप में सामाजिक जीवन के सहज धरातल पर उतर आई।

विशंभरनाथ शर्मा कौशिक के 'परदेशी' (1912 ई) और चंद्रधर शर्मा गुलेरी की 'उसने कहा था' (1915 ई) जैसी सफल कहानियां इसी समय लिखी गई । कहानी का यह आरंभिक विकास कथा-वस्तु में लेखक के व्यक्तिगत हस्तक्षेप से शुरू होता है। इस काल में अनेक लेखकों ने कहानी को रचनात्मक स्तर प्रदान करने में असाधारण प्रतिभा का परिचय दिया । इस तरह कहानी अपने प्रारंभिक काल में ही बाह्य यथार्थ और आंतरिक अनुभूति के कलात्मक सम्मिश्रण को प्रौढ रचनाशील जमीन तैयार करने में समर्थ हो गई।

अंग्रेजी के पठन-पाठन के साथ व्यक्ति की स्वतंत्रता और पूंजीवादी जनतंत्र का सर्वथा नया विचार देश के बुद्धिजीवियों के मन को आंदोलित करने लगा । स्वाधीनता की भावना बढने लगी । इस नयी व्यक्तिचेतना ने देश के रचनात्मक साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला । लोगों का ध्यान अपने परिवेश की ओर गया । व्यक्तिके इस नए साक्षात्कार ने भाव और ईश्वर पर भरोसा रखने की भावना पर चोट पहुंचाई । रचनाकार की आंतरिक और उसकी निजी पहचान आधुनिक युग की सांस्कृतिक चेतना की कला और साहित्य की मुख्य देन है । 19वीं शताब्दी के अंत तक भारतेंदु युग के निबंधकारों के प्रखर स्वर से अद्‌भुत देश प्रेम और जातीयता की भाव धारा लोगों को उज्जवल कर रही थी ।

बीसवीं शताब्दी के शुरू होते-होते देश में उत्पन्न नई मानसिकता की रचनात्मक क्षमता के साथ साहित्य में कहानी विधा का प्रारंभ हुआ । प्रेमचंद ने अपने समकालीन अधिक प्रभावशाली और संभावना युक्त लेखकों के बीच से आगे का रास्ता बना लिया । जयशंकर प्रसाद ने इस दौर में अनेक कहानियां लिखी । उनकी कुछ भाव प्रवण कहानियां आज भी हिंदी भाषा और साहित्य की गौरवपूर्ण रचनाएं हैं।

सामंतवाद के टूटने की एक लंबी प्रक्रिया प्रेमचंद की रचनात्मकता का मूल आधार है । प्रेमचंद उर्दू में पहले लिख रहे थे। 1915 ई. में उनकी पहली कहानी 'पंच परमेश्वर' हिंदी में छपी और साहित्य चर्चा के केंद्र में आ गयी और लोगों ने उनके प्रतिभा को स्वीकार कर लिया । प्रेमचंद के बाद आए कथाकारों ने सामाजिक मनोरंजन, भाषागत चमत्कार पर समकालीन आदर्शवादी विचार को लेकर अनेक महत्वपूर्ण कहानियां लिखी।

हमारे देश दो टुकडों में बांटकर आजाद हुआ। भारत आजाद होते ही वस्तु स्थिति बदल गई थी। कथा संदर्भों के लिए यह काल उलझनों से भरा था। नई कहानी का उदय इसी उलझे हुए सामाजिक संदर्भ में स्वाधीनता की सहज मान्यता के कारण आशा भरा उत्साह के बीच हुआ। गांव, कस्बों, छोटे शहरों और आंचलों से आए नए लेखकों ने इस काल में कथावस्तु का अद्‌भुत विस्तार किया। आजादी के बाद हिंदी कहानी को नया संस्कार देने वाले कहानीकारों ने कहानी को 'नई कहानी' के नाम से अभिहित किया।

नई कहानी का जन्म 1956 ई. से माना जाता है। श्री भैरव प्रसाद गुप्त के संपादन में नई कहानी नाम की एक पत्रिका का एक विशेषांक निकाला। इसके आधार पर अगली कडी की कहानियों को नई कहानी के नाम से संबोधित किया जाने लगा। निश्चय ही बता सकते हैं कि आगामी कहानी का मूल स्वर परिवर्तन का स्वर होगा।

स्वतंत्रता के पश्चात् की कहानियों में कथ्य तथा शिल्प की दृष्टि से अनेक नवीन प्रयोग हुए। लंबी यात्रा के पश्चात् नई कहानी' के नाम से प्रसिद्ध हो गयी।

नई कहानी

राजनीतिक स्तर पर जहां भ्रष्टाचार बढने लगा था वहीं सामाजिक स्तर पर जाति वाद और अधिक भयानक रूप धारण करने लगा था। लेखकों ने इन समस्याओं पर जो कहानियां लिखी वह 'नई कहानी' के नाम से विख्यात हुई। मोहन राकेश, कमलेश्वर, भीष्म साहनी जैसे रचनाकार इसके प्रवर्तक रहे।

सचेतन कहानी

सचेतन कहानी, व्यक्तिवाद का विरोध करती है और मनुष्य को उसके समग्र परिवेश के संदर्भ में स्वीकार करती है। इसमें विविधता और गहराई दोनों मिलती है।

समांतर कहानी

अक्तूबर 1974 ई. के 'सारिका' पत्रिका के अंक से 'समांतर कहानी' का दौर शुरु हुआ। जितेंद्र भाटिया, मिथिलेश्वर आदि रचनाकारों ने इसका समर्थन किया।

सक्रिय कहानी और जनवादी कहानी

यह दोनों एक बिंदु पर बहुत निकट है - व्यवस्था विरोध। दोनों कहानियां आधुनिक आंदोलनों के कहानीकार आर्थिक - सामाजिक शोषण के विरुद्ध है और इसके लिए समकालीन व्यवस्था को जिम्मेदार मानते हैं।

भाषा व शिल्प की दृष्टिसे कहानी में आज भी निरंतर नवीन प्रयोग हो रहे हैं।

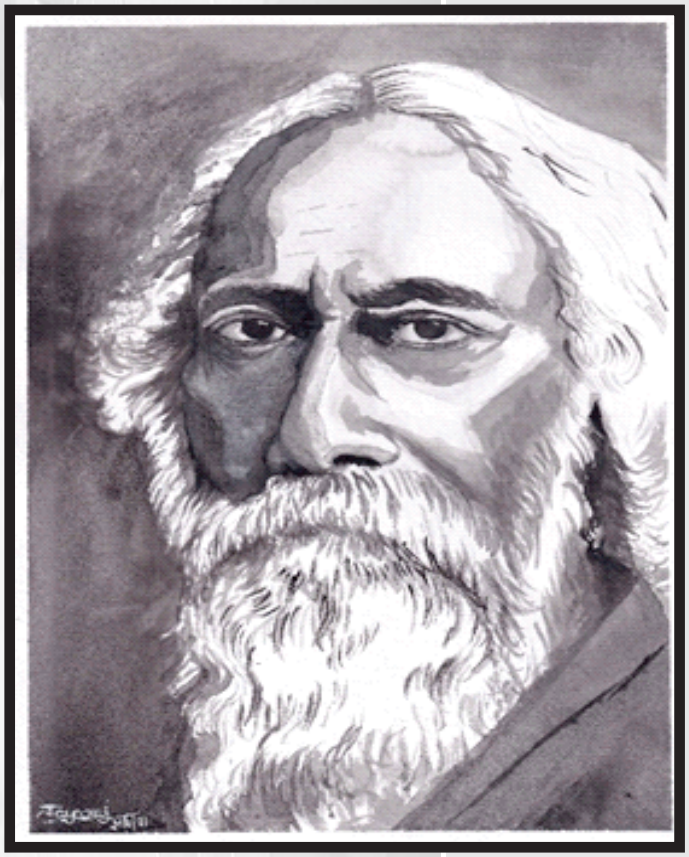

जयराज मण्णूरान
सुपुत्र श्रीमती राजम के लेखापरीक्षक

राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

फिर से ...

मैं वापस जाना चाहती हूँ
मेरा बचपन दुबारा जीना चाहती हूँ
फिर से पापा की परी बनना चाहती हूँ
फिर से माँ के आंचल से लिपटना चाहती हूँ
फिर से भैया की ऊंगली पकडना चाहती हूँ
फिर से वह बचपन जीना चाहती हूँ।

फिर से दादी की गोदी में लेटना चाहती हूँ
फिर से नानी की कहानियां सुनना चाहती हूँ
फिर से दादा की मूंछ में मूह छुपाकर सो जाना चाहती हूँ
फिर से नाना के कांधे पर सवार होना चाहती हूँ
फिर से मासियों की लाडली बनना चाहती हूँ
फिर से मेरा बचपन जीना चाहती हूँ।

सावन के बरसातों में भीगना चाहती हूँ
सागर की लहरों में कदम भिगोना चाहती हूँ
बादलों तक पतंग उठाना चाहती हूँ
कोयल के सुर में सुर मिलाना चाहती हूँ
कच्ची कैरी तोडना चाहती हूँ
इमली का खट्टा मीठा स्वाद चखना चाहती हूँ
फिर से मेरा बचपन जीना चाहती हूँ।

हर आस मन के पूरा करना चाहती हूँ
हर वो गलतियां दुबारा करना चाहती हूँ
हर आंसू हर जख्मों से फिर से गुजरना चाहती हूँ
हर हंसी, हर खुशी, हर जज्बे को संजोना चाहती हूँ
हंस - हंस के आंसू बहाना चाहती हूँ
रोते-रोते हंस पडना चाहती हूँ।
मैं फिर से अपनी जिन्दगी को गले लगाना चाहती हूँ
फिर से यह जनम अपनाना चाहती हूँ।

अंजुम ज़ेहरा
पत्नी श्री सआदत हुसैन,
कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक

डायबिटिज़ : एक गंभीर समस्या

व्यस्त जीवनचर्या को देखते हुए हमें अपने आहार का विशेष ध्यान रखना चाहिए ताकि भविष्य में हम डायबिटीज़, सीवीडी इत्यादि बीमारियों से बच सकें । बढ़ती उम्र के साथ साथ हमें खान-पान पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए क्योंकि 40 वर्ष के बाद व्यक्ति को डायबिटीज़ होने का ख़तरा बना रहता है। यदि व्यक्ति दोषपूर्ण आहार ले रहा है और योगा और व्यायाम नहीं कर पाता है तो उसे मोटापे के साथ-साथ डायबिटीज़ होने का ख़तरा ज़्यादा हो जाता है। डायबिटीज़ उस अवस्था को कहा जाता है जब व्यक्ति की ब्लड शुगर में शर्करा की मात्रा सामान्य से ज़्यादा हो जाती है । ये कार्बोहाइड्रेट मेटाबोलिस्म के सहीं तरीके से न होने पर होती है। इसके सामान्य लक्षणों में ज़्यादा भूख लगना, ज़्यादा प्यास लगना, ज़्यादा पेशाब आना है । इसके अलावा वज़न कम होना चिड़चिड़ापन, लगातार चक्कर आना आदि लक्षण हैं।

डायबिटीज़ का मुख्य कारणों में से एक है आनुवांशिकता (**हेरेडिटरी**) यदि व्यक्ति के परिवार में डायबिटीज़ की बीमारी है तो उसके अन्य परिजनों में डायबिटीज़ होने का ख़तरा ज़्यादा रहता है इसके अलावा यदि व्यक्ति मोटापे से ग्रसित है तो भी डायबिटीज़ होने का खतरा होता है। व्यक्ति को अगर डायबिटीज़ है तो उसके शरीर के अन्य अंगों पर भी डायबिटीज़ का बहुत असर पड़ता है-

ख़ासतौर पर किडनी, दिल, आंखों पर इसलिए डायबिटीज़ होने पर हमें व्यायाम के साथ-साथ, खान-पान पर विशेष ध्यान देना चाहिए ताकि हमारे महत्वपूर्ण अंग सहीं और सुरक्षित रह सकें। डायबिटीज़ दो प्रकार की होती है :

1.आई डी डी एम

2.एन आई डी एम।

आई.डी.डी.एम-इसमें व्यक्ति को इंसुलिन की आवश्यकता होती है वह प्रतिदिन इंसुलिन लगाता है, ये वह अवस्था होती है जब पेनक्रियाज़ इंसुलिन को या तो कम बनाता है या तो बिल्कुल नहीं बनाता है। आई डी डी एम को टाइप-1, डायबिटीज़ कहा जाता है क्योंकि ये कम उम्र के लोगों को होती है। इसके शुरुआती लक्षण हैं वज़न में कमी या एकदम तेज़ी से वज़न बढ़ना, इसके साथ-साथ ज़्यादा प्यास लगना, बार-बार पेशाब आना, थकान लगना। बाद के लक्षणों में सूखी त्वचा होना, मुंह सूखना, सांस लेने में तकलीफ़ भूख में कमी आदि।

एन. आई. डी.एम– इसमें व्यक्ति को इंसुलिन की आवश्यकता नहीं होती है, इसमें व्यक्ति को दवाई दी जाती है एन आई डी एम को टाईप 2 डायबिटीज़ भी कहा जाता है । ये वयस्कों में देखी जाती है । ये वह अवस्था होती है जब पेनक्रियाज़ इंसुलिन को ज़्यादा मात्रा में बनाता है । इसके शुरूआती लक्षणों में वज़न में कमी, भूख ज़्यादा लगना, बार-बार पेशाब आना है।

इन दो के अलावा 1 डायबिटीज़ और होती है गेस्टेशनल डायबिटीज़- ये गर्भावस्था के दौरान होती है, ये वह अवस्था होती है जब गर्भवती महिला के खून में शुगर की मात्रा सामान्य से ज़्यादा हो जाती है, डायबिटीज़ को ज़ड़ से ख़त्म नहीं किया जा सकता है परंतु इसको नियंत्रित किया जा सकता है। इसके लिए व्यक्ति को चाहिए कि वे डॉक्टर से परामर्श लें और डाइटिशियन द्वारा बताए गए आहार को अपने खान-पान में शामिल करें।

डायबिटीज़ की अवस्था में डाईट तो महत्वपूर्ण होती ही है साथ-साथ व्यायाम, योग भी शरीर पर काफ़ी प्रभाव डालता है। यदि हम रोज़ाना की ज़िन्दगी में अपनी डाईट को सही और पौष्टिक रखेंगे और उसके साथ-साथ व्यायाम व मंडूक आसन की तरह के योगासन करेंगे तो हम भविष्य में डायबिटीज़ जैसी घातक बीमारी से सुरक्षित रह सकते हैं।

वर्ष 2019-20 के दौरान हिंदी में कार्य करने के लिए संघ सरकार की प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत विजेता

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) का कार्यालय, तिरूवनंतपुरम

प्रथम पुरस्कार
श्रीमती सी जी सुजाता,पर्यवेक्षक

द्वितीय पुरस्कार
श्री वैभव सिंह, डी ई ओ

प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) का कार्यालय, तिरूवनंतपुरम

प्रथम पुरस्कार
श्रीमती मेरी जया जोस,
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

द्वितीय पुरस्कार
श्री साई कुमार जे.ए
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

तृतीय पुरस्कार
श्रीमती राखी पी.ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

वर्ष 2019-20 के दौरान हिंदी में कार्य करने के लिए कार्यालयीन प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत विजेता

श्रीमती दिव्या आई वी,सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रथम पुरस्कार

श्री अभिजित के नंब्यार/ वरिष्ठ लेखापरीक्षक
द्वितीय पुरस्कार

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की लेखापरीक्षा रिपोर्ट (सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र)

प्रस्तावना

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक की यह रिपोर्ट संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत राज्य विधान सभा में प्रस्तुत किए जाने हेतु केरल के राज्यपाल को समर्पित करने के लिए तैयार की जाती है।

इस रिपोर्ट में सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र के तहत आने वाले केरल सरकार के विभागों एवं स्वायत्त निकायों जिनमें उपभोक्ता मामले विभाग, सहकारिता, मत्स्य-पालन, सामान्य शिक्षा, गृह, आवासन, श्रम एवं कौशल, अनुसूचित जाति विकास, अनुसूचित जनजाति विकास एवं जल संसाधन शामिल है, की निष्पादन लेखापरीक्षा एवं अनुपालन लेखापरीक्षा के महत्वपूर्ण परिणाम अंतर्निहित है।

इस रिपोर्ट में उल्लिखित मामले, वे हैं जो वर्ष 2017-18 की अवधि के दौरान लेखापरीक्षा के ध्यान में आए हैं, और वे भी हैं जो पूर्व वर्षों में ध्यान में आए तो थे लेकिन पिछली रिपोर्टों में समाविष्ट नहीं किए जा सके। जहाँ आवश्यक लगे, वर्ष 2017-18 के बाद की अवधि के मामले भी शामिल किए हैं।

भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक द्वारा जारी लेखापरीक्षण मानकों के अनुरूप लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी। मुख्य निष्कर्षों में कुछ नीचे दिए गए हैं:

लेखापरीक्षा रिपोर्ट

(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र)

31 मार्च 2018 को समाप्त वर्ष के लिए सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र की लेखापरीक्षा रिपोर्ट में पुलिस बल के आधुनिकीकरण एवं सुदृढीकरण और केरल राज्य हाउसिंग बोर्ड के कार्यचालन पर दो निष्पादन लेखापरीक्षा के निष्कर्ष एवं विभिन्न सरकारी विभागों पर छः अनुपालन लेखापरीक्षा पैराग्राफ शामिल हैं।

निष्पादन लेखापरीक्षा

पुलिस बल का आधुनिकीकरण एवं क्षमता संवर्धन

अध्याय II

'पुलिस बलों का आधुनिकीकरण' भारत सरकार की एक योजना है, जिसका उद्देश्य राज्य पुलिस बलों की दक्षता और प्रहार क्षमता को बढ़ाना है ताकि राज्य में आंतरिक सुरक्षा वातावरण, उग्रवादी गतिविधियों एवं कानून और व्यवस्था की स्थिति की चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार किया जा सके। योजना के मुख्य घटक गतिशीलता, हथियार, संचार और निगरानी, फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशालाएं, प्रशिक्षण आदि के लिए उपकरणों की खरीद एवं निर्माण थे। राज्य में पुलिस बल के आधुनिकीकरण की स्थिति का आकलन करने के लिए निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गई थी।

प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष

विशेषस शस्त्रपुलिस बटालियन, तिरुवनंतपुरम में हथियारों और सक्रिय कारतूसों के भौतिक स्टॉक की कमी देखी गई थी।

पालक्कड़, मलप्पुरम, इडुक्की और वयनाड के घने जंगल में एंटी- माओवादी ऑपरेशन पुलिस बलों की सदृश संचार उपकरणों पर निर्भरता के कारण बाधित हुआ था। केरल सरकार स्पेक्ट्रम शुल्क का समय पर भुगतान करने में और डिजिटल मोबाइल रेडियो की खरीद के लिए भारत सरकार से लाइसेंस प्राप्त करने में विफल रही।

लेखापरीक्षा के दौरान फोरेंसिक विज्ञान प्रयोगशाला में, मामलों के निपटान में देरी देखी गई। वर्ष 2013- 2018 के दौरान, अनिर्णत मामले बढ़कर 9,265 हो गए, जिसमें 1,755 (19%) आईपीसी की धारा 302, 307 और 376 और , पोक्सो अधिनियम 2012 और एससी और एसटी (अत्याचार निवारण) अधिनियम के अंतर्गत गंभीर अपराध मामले थे।

पुलिस विभाग ने वर्ष 2013- 18 के दौरान एमओपीएफ योजना के दिशानिर्देश का उल्लंघन किया जो कारों की खरीद पर प्रतिबंध लगाती है। पुलिस स्टेशन में वाहनों की कमी को पूरा करने के बजाय, पुलिस विभाग द्वारा खरीदे गए 269 हल्के मोटर वाहन में से 15% लक्जरी कारें थीं, जिन्हें उच्च-स्तरीयअधिकारियों और सीबीसीआईडी जैसी गैर-कार्यात्मक इकाईयों के प्रयोग हेतु लगाया गया था।

पुलिस विभाग ने जीपीएस आधारित संचार प्रणाली लगे वाहन, वॉयस लॉगर सिस्टम, वाहन पर लगे एक्स-रे बैगेज सिस्टम और शबरीमला के लिए सुरक्षा उपकरणों जैसे उपकरणों की खरीद में स्टोर खरीद मैनुअल और सीवीसी दिशानिर्देशों का उल्लंघन किया।

राज्य पुलिस प्रमुख (एसपीसी) ने अवर अधीनस्थ स्टाफ क्वार्टरों के निर्माण के लिए नियत किए 2.81 करोड़ रुपये को एसपीसी / एडीजीपी के लिए विला के निर्माण के लिए भुगतान किया।

केरल राज्य आवासन बोर्ड का कार्यचालन

अध्याय III केरल राज्य आवासन बोर्ड (केएसएचबी) की स्थापना केरल राज्य आवासन बोर्ड अधिनियम,1971 के प्रावधानों के अधीन वर्ष 1971 में हुई। राज्य में सभी आवासीय गतिविधियों की योजना एवं समन्वयन में नोडल भूमिका अदा करने के लिए केएसएचबी को अधिनियमित करता है। केएसएचबी द्वारा निर्वहन की गई विभिन्न गतिविधियों और इसके कामकाज के आंकलन के लिए वर्ष 2013-18 की अवधि को शामिल करते हुए एक निष्पादन लेखापरीक्षा

आयोजित की गई।

प्रमुख लेखापरीक्षा निष्कर्ष

केएसएचबी ने बाधा मुक्त भूमि की उपलब्धता, परियोजनाओं की वित्तीय व्यवहार्यता, परियोजना के वित्तपोषण पर आश्वासन प्राप्त करना, आदि सुनिश्चित किए बिना योजनाओं के लिए केरल सरकार से योजनाओं के लिए स्वीकृति मांगी,परिणामस्वरूप योजनाएं कार्यान्वित होने में विफल रही।

वर्ष 1998- 99 से वर्ष 2016-17 के दौरान राज्य में संस्वीकृत 18 कामकाजी महिला छात्रावासों में से 2013-14 तक 11 संस्वीकृत कार्य पूरे हुए। वर्ष 2014-15 से संस्वीकृत 6 छात्रावासों में कार्य अभी शुरू किया जाना है जबकि एक छात्रावास का कार्य प्रगति पर है।

आर्थिक रूप से कमजोर आवासहीन को फ्लैट प्रदान करने के साफल्यम योजना के अधीन 1,032 आवास इकाइयों के लक्ष्य के विपरीत, केएसएचबी वर्ष 2012-18 की अवधि के दौरान केवल 72 आवास इकाइयों (7%) को ही पूरा कर सका। वर्ष 2014-15 के दौरान द्वितीय चरण के अधीन केएसएचबी द्वारा लिए गए सभी 24 आवास इकाइयां अपूर्ण रहीं। केएसएचबी ने निर्माण की लागत को निर्धारित दरों तक सीमित करने के लिए काम की गुणवत्ता के साथ भी समझौता किया।

गरीब शहरी श्रमिकों को किराए पर आवासीय फ्लैट प्रदान करने के उद्देश्य से किराये की अभिनव आवासीय स्कीम के अधीन फ्लैट्स अपात्र लाभार्थियों को आवंटित किए गए थे।

केएसएचबी के अधीन वित्तीय प्रबंधन त्रुटिपूर्ण था। वित्तीय विवरण में सामग्री का गलत विवरण था और इस तरह सरकार सहित हितधारकों द्वारा उपयोग के लिए अनुपयुक्त खातों को प्रस्तुत किया गया।

अनुपालन लेखापरीक्षा

चयनित विषयों की लेखापरीक्षा

सरकारी औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों का आधुनिकीकरण और उन्नयन

पैराग्राफ 4.1 केरल सरकार प्रशिक्षण निदेशालय को औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों के आधुनिकीकरण के लिए नई इमारतों के निर्माण, मौजूदा भवनों के नवीनीकरण, छात्रावास की सुविधा, उपकरण और आदि के लिए बजटीय आवंटन प्रदान करने सहित वार्षिक सहायता प्रदान करती है, ताकि व्यावसायिक प्रशिक्षण मानदंडों प्राप्त कराने के लिए आईटीआई को सक्षम बना सके। भारत सरकार ने भी 38 आईटीआई को सेंटर ऑफ एक्सीलेंश (सीओई)के रूप में उन्नयन के लिए चयनित किया है। 31 मार्च 2018 तक, राज्य में 137 सरकारी आईटीआई और 486 निजी आईटीआई थे। 137 सरकारी आईटीआई में से, महिलाओं के लिए 14 आईटीआई सहित 91 आईटीआई, औद्योगिक प्रशिक्षण विभाग (आईटीडी) द्वारा, अनुसूचित जाति विकास विभाग (एस सी डी डी) द्वारा 44 आई टी आई और 2 आईटीआई अनुसूचित जनजाति विकास विभाग (एसटीडीडी) द्वारा प्रशासित किए गए थे।

नमूना- जॉच किए 32 आईटीआई में से कोई भी सभी निर्दिष्ट एनसीवीटी अपेक्षाओं का पालन नहीं किया है। यहां तक कि ऐसे आईटीआई जो एनसीवीटी से संबद्ध थे, उनके पास भी अपेक्षित सुविधाएं नहीं थीं। बेहतर परिणाम निकालने के लिए एसटीडीडी के अधीन आईटीआई द्वारा दी जाने वाली सेवा को सुदृढ़ किये जाने की आवश्यकता है। आईटीआई में उपकरणों में कमी देखी गई, जिसमें 6 ऐसे आईटीआई शामिल हैं जिन्हें सेंटर ऑफ एक्सीलेंस के रूप में उन्नत किए जाने के लिए पहचान की गई है। सिविल कार्यों के कार्यान्वयन में अक्षमताओं और परिसंपत्ति के निष्क्रिय होने के कारण आईटीआई के उन्नयन में बाधा उत्पन्न हुई। आईटीआई पाठ्यक्रमों की मांग और नौकरियों को प्राप्त करने की बढ़ी हुई संभावना के बावजूद, भारत सरकार द्वारा परिकल्पित आईटीआई के आधुनिकीकरण और उन्नयन को अभी तक प्राप्त किया जाना चाहिए था। पहचान की गई कमी को दूर किए जाने की आवश्यकता है ताकि राज्य में आईटीआई को आधुनिक और उन्नत बनाया जाए जिससे सुनिश्चित हो सके कि प्रशिक्षु रोजगार के अवसरों का लाभ उठाने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हैं।

अनवधानता/शासन की विफलता उपभोक्ता मामले विभाग

पैराग्राफ 4.2 निरीक्षक लीगल मेट्रोलॉजी, सर्किल II, नैय्याटिनकरा, द्वारा कोडल प्रावधानों का अपालन न करने पर रुपये 28,202 का दुरुपयोग हुआ।

सहकारिता विभाग

पैराग्राफ 4.3 को-ऑपरेटिव अकादमी ऑफ प्रोफेशनल एजुकेशन के इंजीनियरिंग कॉलेज के निर्माण के लिए वित्त पोषण पैटर्न का सही आकलन करने में विफलता के परिणामस्वरूप, कम से कम 8.91 करोड़ का अपरिहार्य, निष्फल व्यय हुआ।

मत्स्य पालन विभाग

पैराग्राफ 4.4 मत्स्यफेड द्वारा सीवीसी के दिशानिर्देशों का उल्लंघन और समुद्री डीजल इंजनों की खरीद में पर्याप्त परिश्रम न लगाने के कारण और मौजूदा केरोसीन इंजनों का व्यवहार्य विकल्प खोजने में विफल रहने के परिणामस्वरूप 1.29 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ।

सामान्य शिक्षा विभाग

पैराग्राफ 4.5 परीक्षा भवन की छः मंजिला इमारत पर एक अस्थायी अतिरिक्त मंजिल के निर्माण हेतु पब्लिक इंस्ट्रक्शन के निदेशक के अविवेकपूर्ण निर्णय और लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्माण की संरचनात्मक क्षमता का सही निर्धारण करने में हुई विफलता के परिणामस्वरुप संरचना के आंशिक रूप से ध्वस्त होने के कारण रुपये 2.35 करोड़ का निष्फल व्यय हुआ।

जल संसधन विभाग

पैराग्राफ 4.6 केरल जल प्राधिकरण ने केरल सरकार द्वारा निर्धारित शर्तों का अनुपालन किए बिना एक जलापूर्ति योजना के लिए पाइपलाइन बिछाने के काम की शुरुआत की। बाद में काम बंद कर दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप 8.50 करोड़ रुपये का निष्फल व्यय हुआ, इसके अलावा कोल्लम जल आपूर्ति योजना में एक अतिरिक्त जल स्रोत प्रदान करने में असमर्थता थी।

हिंदी के प्रयोग के लिए वर्ष 2021-22 का वार्षिक कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को **100%** 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को **100%** 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को **65%** **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति **100%**	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को **90%** 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को **90%** 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **90%**	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को **55%** 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को **55%** 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को **55%** **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति **55%**
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	**100%**	**100%**	**100%**
3.	हिंदी में टिप्पण	**75%**	**50%**	**30%**
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	**70%**	**60%**	**30%**
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	**80%**	**70%**	**40%**
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	**65%**	**55%**	**30%**
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	**100%**	**100%**	**100%**
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	**100%**	**100%**	**100%**
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पैनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	**50%**	**50%**	**50%**
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	**100%**	**100%**	**100%**
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	**100%**	**100%**	**100%**

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)	**25%** (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण	वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण		
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)		
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति	वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)		
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	**100%**	**100%**	**100%**
16.	मंत्रालयों/विभागों/कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों के ऐसे अनुभाग जहां संपूर्ण कार्य हिंदी में हों ।	**40%**	**30%**	**20%**
		(न्यूनतम अनुभाग)		

सार्वजनिक क्षेत्र के उन उपक्रमों/निगमों आदि, जहां अनुभाग जैसी कोई अवधारणा नहीं है, "क" क्षेत्र में कुल कार्य का 40%, "ख" क्षेत्र में 25% और "ग" क्षेत्र में 15% कार्य हिंदी में किया जाए ।

सजीन्द्र कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

मेरा कसूर बता दो

जला दिया जला दिया, पेट्रोल फेंक कर
बस इतनी सी बात पर
तुम्हारे प्यार का इज़हार था
मेरे प्यार में इन्कार था
बस इतनी सी बात पर
जला दिया मेरा चेहरा व शरीर
गलती हो गई मुझसे
जो तुम्हें समझ न सकी
अपनी गलती मानती हूं मैं
क्या अब तुम मुझे अपनाओगे
क्या अब मुझसे आंखें मिला सकोगे
जो पूरी तरह जल चुकी है
मेरे शरीर पर हाथ फेर सकोगे
जो पूरी तरह ज़ख्मों से भरी है
तुमने तो अपनी मर्दानगी का गौरव प्राप्त कर लिया
मेरा शरीर जलाकर
ऊपर वाले से एक ही विनती है
अगले जन्म में तुम्हारी बेटी को
ऐसा ही प्रेमी मिले
तो समझ आये तुम्हें भी
कि कितना दर्द होता है अपनों और अपने परिजनों का
मेरा कसूर तो बता दो ।

पारितोष चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

हार-जीत

सफलता का दूसरा शब्द है जीत और विफलता का हार। जीवन की सबसे बड़ी परीक्षा यही है कि हार और जीत का सामना करना। यह नहीं कि कोई जीत गया तो उसकी जिम्मेदारी समाप्त हो गई परंतु उसे अपने लक्ष्य की अगली आने वाली नई चुनौतियों का सामना पहले से ज्यादा करना पड़ता है। अपने लक्ष्य से ध्यान ना भटके यह भी एक सबसे बड़ी जिम्मेदारी है। किंतु हर एक ऐसी चीज है जो किसी को बर्दाश्त नहीं होती। हार का सामना करना बेहद कठिन होता है। उससे हमे अपनी कमजोरियों का पता चलता है और हमें आने वाली अगली चुनौतियों की तैयारी करने का तरीका भी सिखाता है।

इंसान को कभी भी हार जीत का सामना करने से घबराना नहीं चाहिए, किंतु उसका सामना बड़े डट कर करना चाहिए। उसमें अपनी भागीदारी को प्रस्तुत करना चाहिए। इंसान इन सब परिस्थितियों से अपने जीवन में एक नए रूप में उभर कर आता है। और वह स्वयं को एक नए रूप में देखकर अपनी एक नई पहचान बना सकता है। यह किसी को नहीं पता कि आज, अभी, अगले मिनट कब क्या हो जाए! और इंसान को किन चुनौतियों का सामना करना पड़े।

हमेशा हार-जीत को हंसी-खुशी के साथ अपने जीवन का हिस्सा समझकर हमें स्वीकार करना चाहिए। हमें अपनी हिस्सेदारी और क्षमता का हमेशा उपयोग का जीवन की हर चुनौतियों का सामना कर आने वाले परिणाम चाहे हार हो या जीत, दोनों को कुबूल करना चाहिए।

मालविका जे आर
सुपुत्री राखी पी ओ
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मां

पहली बार जब मैंने दुनिया को देखा,

तब वही एहसास हुआ कि

दुनिया के हर चीज की तुलना

मां से करना आसान हैं, लेकिन मां सब कुछ है।

मां तो बादल है जो प्यार बूंदों से सबका मन भरना चाहती है

मां वो हवा है जिसकी वजह से जिन्दगी बहती रहती है।

मां वो फूल है जो अपनी मधु से दूसरों की प्यास मिटाती है।

मां वो बारिश है जिसकी आंसू से दुनिया की मंजिल हासिल होती है।

मां वो जिन्दगी है जिसमें सुख, दुख, त्याग और प्यार की रोशनी मिली हुई है।

मां वो इंसान है जो प्यार के अलावा कुछ नहीं चाहती है जिन्दगी भर।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग
मिशन, दृष्टि और नैतिक मूल्य

दूरदृष्टि

भारत के सर्वोच्च लेखापरीक्षा संस्था का दृष्टिकोण दर्शाता है कि हम क्या बनना चाहते हैं : हम सार्वजनिक क्षेत्र लेखापरीक्षा एवं लेखाकरण में श्रेष्ठ कार्य में एक वैश्विक अग्रणी और राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सर्जक बनने का प्रयास करते हैं और सार्वजनिक वित्त और अभिशासन पर स्वतंत्र, विश्वसनीय, संतुलित और समयोचित रिपोर्ट के लिये जाने जाते हैं।

मिशन

हमारा मिशन हमारी वर्तमान भूमिका का प्रतिपादन करता है और हम वर्तमान में क्या कर रहे हैं, इसकी व्याख्या प्रस्तुत करता है : भारत के संविधान द्वारा अधिदेशित लेखापरीक्षा एवं लेखाकरण की उच्च गुणवत्ता के माध्यम से हम जबाबदेही, पारदर्शिता और सुशासन को बढ़ावा देते हैं और हितधारकों, विधायिका, कार्यपालिका और जन सामान्य को स्वतंत्र विश्वास प्रदान करते हैं कि लोक निधियों को दक्षतापूर्वक एवं अभिप्रेत उद्देश्यों के लिये उपयोग किया जाता है।

नैतिक मूल्य

हमारा नैतिक मूल्य है, हम जो करें वह सभी के लिये मार्गदर्शक प्रकाश स्तंभ हो और हमारा कार्य निष्पादन, स्वतंत्रता, निष्पक्षता, अखंडता, विश्वसनीयता, व्यावसायिक उत्कृष्टता, पारदर्शिता , सकारात्मक दृष्टिकोण का आँकलन हमें एक बैंचमार्क प्रदान करता है।